–द्रुतवाचन के साहित्यकार–

बी.ए. सेमेस्टर– २

नामवर सिंह– (१९२७)

हिन्दी आलोचना और निबंध साहित्य को समृद्ध बनाने में बहुमूल्य योगदान देने वाले नामवर सिंह के विश्लेषण में राजनीति और साहित्य दोनों का संश्लिष्ट रूप रहता है, हालांकि उनके निबंधों का मूल स्वर प्रायः वर्तमान युग की साहित्यिक विचारधारा से जुड़ा रहता है। यह सही है कि अपने साहित्यिक लेखन में वे प्रतिबद्धता का पक्ष छोड़ते नहीं हैं फिर भी उनके तथ्य और तर्क प्रमाण पुष्ट होने के कारण ग्राह्य प्रतीत होते हैं। उनके निबंधों की शैली में वक्तृत्त्व कला का भी पुट रहता है जो निबंध में रोचकता और पठनीयता को जोड़कर आस्वाद्य बना देता है।

'कविता के नये प्रतिमान' उनकी एक ऐसी समीक्षात्मक पुस्तक है जो समालोचना निबंध का सुंदर निदर्शन है। 'छायावाद', 'दूसरी परम्परा की खोज', 'इतिहास और आलोचना', 'वाद-विवाद-संवाद', 'कहानी नयी कहानी' आदि पुस्तकों में उनकी समीक्षा पद्धति और निबंध शैली को देखा जा सकता है। 'कविता के नये प्रतिमान' पर इन्हें १९७१ का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

स्वदेश भारती– (१९३९)

स्वदेश भारती का जन्म उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ में १२ दिसंबर १९३९ को हुआ तथा शिक्षा इलाहाबाद, कोलकाता और अन्नामलाई विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य महामहोपाध्याय (डी.लिट्.) की उपाधि प्राप्त की।

स्वदेश भारती ने २२ कविता संग्रह, ८ उपन्यास, ४५ संकलन एवं रूपाम्बर के २०० संस्करण प्रकाशित किए हैं। 'औरतनामा' नामक कृति पर उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा १९८९ में 'प्रेमचंद सम्मान' दिया गया। मैसूर हिन्दी परिषद ने सन १९९४ में 'हिन्दी सेवा सम्मान' प्रदान किया तथा २००१ में उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा 'साहित्य भूषण' से अलंकृत किया गया।

इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं– 'इक्कीस सुबह और' (१९६९), 'तपिस मिटती नहीं' (१९७४) 'आवाजों के कटघरे में' (१९७४), 'दूसरा वामाचार' (१९८३), 'भरे हाट के बीच' (१९८४), 'कलकत्ता ओ कलकत्ता' (१९९०), 'त्रासदी के द्वार पर' (१९९१), 'सागर प्रिया' (१९९२), 'सीढ़ियाँ चढ़ता सूर्य' (१९९४), 'सूर्य का आहत मौन' (२०००), 'असमय की जर्जर नाव में' (२००१), 'अनन्ततः' (२००१)। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'चौथा सप्तक' के कवि के रूप में भी स्वदेश भारती की पहचान है।

स्वदेश के उपन्यासों में यथार्थ की वस्तुनिष्ठ प्रस्तुति दिखाई देती है। इनकी रचनाएँ संघर्षों, त्रासदियों और सभ्यताओं के साथ व्यवस्थाओं की विफलताओं का एक बहुआयामी चिन्तन दस्तावेज हैं। भारती का मानना है कि आम आदमी की व्यथा को यदि हम पाठकों तक नहीं लाते हैं तो अपने साहित्यिक कर्म से गद्दारी करते हैं तथा अपनी आत्मा के स्वयं हत्यारे बन जाते हैं।

ममता कालिया– (१९४०)

नारी मनोविज्ञान तथा सामाजिक विसंगतियों को केंद्र में रख कर सन १९६० से लेखन कर रही ममता कालिया का जन्म २ नवंबर १९४० को वृंदावन में हुआ था। उनकी शिक्षा नागपुर, मुंबई, पुणे, इंदौर तथा दिल्ली में हुई। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तक शिक्षित ममता कालिया का हिन्दी कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपनी कहानियों का कथानक मध्यवर्गीय व्यक्ति की विडंबना को बनाया।

ममता कालिया ने नारी जीवन के विविध पक्षों को आधुनिक स्थितियों और संदर्भों में रखकर प्रस्तुत किया। इसके अलावा अपने समाज में स्त्रियों की स्थिति पर उन्होंने अनेक स्तंभ लिखे तथा अनेक पुस्तकों का संपादन भी किया। **इनके उपन्यासों में** 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'एक पत्नी के नोट्स', कविता संग्रह में 'ए ट्रिब्यूट टू पापा', 'पोयम्स' तथा कहानी संग्रहों में 'छुटकारा', 'सीट नंबर छः', 'उसका यौवन', 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन', 'बोलने वाली औरत', 'चर्चित कहानियाँ' प्रमुख हैं।

–०–०–०–०